C O N T E N T S

Fifteenth Series, Vol. XXXVI, Fifteenth Session, 2013/1935 (Saka)
No. 2, Friday, December 06, 2013/Agrahayana 15, 1935 (Saka)

S U B J E C T	P A G E S
OBITUARY REFERENCE	2-15
WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS	
Starred Question Nos.21 to 40	16-120
Unstarred Question Nos.231 to 460	121-668
ANNEXURE – I	
Member-wise Index to Starred Questions	669
Member-wise Index to Unstarred Questions	670-674
ANNEXURE – II	
Ministry-wise Index to Starred Questions	675
Ministry-wise Index to Unstarred Questions	676

OFFICERS OF LOK SABHA

THE SPEAKER

Shrimati Meira Kumar

THE DEPUTY SPEAKER

Shri Karia Munda

PANEL OF CHAIRMEN

Shri Basu Deb Acharia

Shri P.C. Chacko

Shrimati Sumitra Mahajan

Shri Inder Singh Namdhari

Shri Francisco Cosme Sardinha

Shri Arjun Charan Sethi

Dr. Raghuvansh Prasad Singh

Dr. M. Thambidurai

Shri Satpal Maharaj

Shri Jagdambika Pal

SECRETARY GENERAL

Shri S. Bal Shekar

LOK SABHA DEBATES

LOK SABHA

Friday, December 06, 2013/Agrahayana 15, 1935 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[MADAM SPEAKER *in the Chair*]

OBITUARY REFERENCE

MADAM SPEAKER: Hon. Members, I have to inform the House about the sad demise of Dr. Nelson Mandela who was the first elected President of the Republic of South Africa and served the country from 1994 to 1999.

He fought relentlessly for the rights and liberty of the people of South Africa throughout his life. His struggle gave hope to millions suffering around the globe. Dr. Mandela became a powerful symbol of the Anti-apartheid Movement in South Africa. He is respected all over the world for his selfless services to humanity.

Dr. Mandela received India's highest civilian award 'Bharat Ratna' in 1990.

The Nobel Peace Prize was conferred on him in 1993.

Dr. Mandela passed away on 6th December, 2013 at Johannesburg in South Africa at the age of 95.

डॉ. शफ़ीकुर्रहमान बर्क़ (सम्भल): अध्यक्ष महोदया, आज बाबरी मस्जिद की शहादत का दिन है। ...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Shri Sushilkumar Shinde.

… (*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदया : आप एक मिनट सुनिये, ओबिचुएरी हो रही है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : ओबिचुएरी हो रही है, आप बैठ जाइये।

...(व्यवधान)

गृह मंत्री (श्री सुशीलकुमार शिंदे): अध्यक्ष महोदया, डॉ. नेल्सन मंडेला का देहान्त आज हो गया। कई महीनों से वह बीमार थे। जैसे वह जेल में अपनी स्वतंत्रता के लिए झगड़ते रहे, वैसे ही अपने आयुष के

लिए भी वे झगड़ते रहे। साउथ अफ्रीका की जनता को, पूरे देश के लोगों को और पूरी दुनिया के लोगों को एक विश्वास दिलाते रहे कि अपार्थाइड के विरूद्ध लड़ने वाला एक नेता नियती को भी लड़कर बताता है और 95 साल तक उन्होंने अपनी जिन्दगी बितायी। भारत ने उनका गौरव किया। भारत ऐसे कभी दूसरे देश के लोगों या नेताओं को भारत रत्न नहीं देता है, लेकिन नेल्सन मंडेला एक ऐसे नेता थे, जिन्होंने महात्मा गाँधी जी जैसा यज्ञ किया और अपने लोगों के लिए जेल गये और 28 साल जेल में रहे। मैं अपार्थाइड की मीटिंग में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए साउथ अफ्रीका गया था। जिस जेल में वे रहे थे, रॉबिन आइलैंड, उस जेल में मैंने जाकर देखा, वह कोठरी देखी, उनके कपड़े देखे और तब मेरा अन्तःकरण इतना दुखी था कि एक छह फीट लम्बाई वाला इन्सान, उसे पांच फीट की कोठरी में रखा गया था, कैसे उन्होंने अपनी जिन्दगी बितायी होगी? लेकिन अपने देश की स्वतंत्रता के लिए, अपने लोगों के लिए, ब्लैक मूवमेंट के लिए उन्होंने जो लड़ाई की है और दुनिया के सामने एक मिसाल रख दी है कि अपने दबे हुए लोगों के लिए, स्वतंत्रता पाने के लिए हम क्या कर सकते हैं? नेल्सन मंडेला दुनिया में एक ऐसा नेतृत्व देने वाले नेता रहे, जो अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस वर्ष 1952 में स्थापित हुयी, तभी से हमारी कांग्रेस पार्टी का रिश्ता भी उनसे रहा है। ये दोनों नेता, महात्मा गाँधी जी और नेल्सन मंडेला, भारत इन्हें दूसरा नहीं समझता था क्योंकि हमारी लड़ाई वही थी। उस लड़ाई को लड़ते-लड़ते आखिर आज उन्होंने आखिरी सांस ले ली। ऐसे महान नेता को भारत कभी नहीं भूल सकता है। मैं अपनी पार्टी की ओर से, अपने सभागृह की ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्रीमती सुषमा स्वराज (विदिशा): अध्यक्ष जी, श्री नेल्सन मंडेला जी के लिए जो उद्गार आपने पीठ से व्यक्त किए हैं, मैं अपनी पार्टी की ओर से संबद्ध करने के लिए खड़ी हुयी हूं। अध्यक्ष जी, जीवन और मृत्यु का एक शाश्वत संबंध है। जो आया है दुनिया में, वह जरूर जाएगा, लेकिन कुछ व्यक्तित्व दुनिया में ऐसे आते हैं, जो मरने के बाद भी अमर हो जाते हैं और ऐसे पदचिन्ह वे जहां में छोड़ जाते हैं, जो अमिट रहते हैं। संत कबीर का एक दोहा है,

" जब तू आया जगत में, जग हंसा तू रोए,
ऐसी करनी कर चलो, तू हंसे जग रोए।"

श्री नेल्सन मंडेला एक ऐसी ही करनी करके गए हैं। जीवन के 28 वर्ष जेल में काटना आसान नहीं होता और वह भी किसलिए? रंगभेद की एक नीति जो केवल अश्वेतों के लिए नहीं, बल्कि मानवता के प्रति अपराध है, उस रंगभेद की नीति के खिलाफ उन्होंने संघर्ष किया। उन अश्वेतों के लिए वे लड़े, जो मानवताविहीन कर दिए गए थे। इतना बड़ा संघर्ष करने के बाद भी उनके माथे पर कोई शिकन नहीं। जब

वे बाहर आए और जिस तरह से लोगों ने उनको अपनाया, जिस तरह से उन्हें सम्मानित किया, न उन्हें उसका मद हुआ और न उन्हें उस बात का अभिमान हुआ कि वे दुनिया के इतने सर्वोच्च नेता माने गए हैं और न उन्हें उस संघर्ष के बारे में जरा भी दुख हुआ, जो उन्होंने 28 वर्ष जेल में बैठकर बिताये थे।

ठीक कहा शिंदे जी ने कि भारत और दक्षिण अफ्रीका में बहुत समन्वय इस मामले में है कि जिस तरह की स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई महात्मा गांधी ने लड़ी, उसकी प्रेरणा भी दक्षिण अफ्रीका से ली थी और बाद में उनके अपने दक्षिण अफ्रीका के नेता ने अश्वेतों के प्रति यह संघर्ष किया। आज जिस समय उनका निधन हुआ है, हालांकि वह बहुत लंबे समय से बीमार चल रहे थे, लेकिन हर कोई यह सोच रहा था कि जैसे वह अश्वेतों के लिए रंगभेद की नीति के खिलाफ जूझे, उसी तरह का संघर्ष उन्होंने अपनी बीमारी के साथ भी किया। लगता था कि एक दिन उन्हें जाना है, जिस तरह से वह बीमार चल रहे थे, लेकिन तब भी मन शायद यह समाचार सुनने के लिए तैयार नहीं था। जिस समय उनका यह समाचार आया, उस समय एक धक्का सा लगा और लगा कि एक बहुत बड़ी शख्सियत आज दुनिया से उठकर चली गयी है। एक शेर मुझे याद आ रहा है, शायद पंडित नेहरू की डेथ पर किसी शायर ने कहा था -

" ऐ अजहल तुझसे बहुत ही सख्त नादानी हुयी,
फूल वह तोड़ा कि गुलशन भर की वीरानी हुयी।"

आज मंडेला जी के जाने के बाद दुनिया एक बहुत बड़े शख्स से विहीन हो गयी है, एक ऐसा भाव मन में उभर रहा है। मैं अपनी ओर से, अपनी पार्टी की ओर से बहुत ही भावभीनी श्रद्धांजलि उनके चरणों में अर्पित करती हूं।

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी): अध्यक्ष महोदया, आज बहुत ही दुःखद दिन है। नेल्सन मंडेला ने गांधी जी को आदर्श माना था। गांधी जी के रास्ते पर चलकर श्वेत और अश्वेत के बीच जो भेदभाव था, अश्वेतों के साथ जो ज्यादती की जा रही थी, जो शोषण किया जा रहा था, इसी आधार पर उनके लिए उन्होंने संघर्ष किया। ऐसा संघर्ष उन्होंने लगातार किया। इसके परिणामस्वरूप उनको 27 साल से अधिक समय तक जेल में रहना पड़ा। वह हमारे लिए, हमारे देश के लिए और आने वाली पीढ़ी के लिए एक आदर्श बन गए हैं कि अन्याय के खिलाफ कहां तक लड़ा जा सकता है। जब वे जेल से छूटे तो सबसे पहले भारत में आए। वे गांधी जी को आदर्श मानते थे, इसलिए भारत में आए। मेरा सौभाग्य है कि वे सीधे लखनऊ गए और लखनऊ में दिन भर दौरा किया। उन्होंने कहा कि मैं काशी जाना चाहता हूं और नाव में बैठ कर गंगा में भ्रमण करना चाहता हूं। वे बनारस गए। हम दोनों साथ-साथ नाव में एक किलोमीटर तक इधर-उधर घूमें। हमारा और उनका साथ पूरे दिन रहा। उनसे बातचीत हुई। मुझे आज व्यक्तिगत रूप से बहुत अफसोस है। हमारा उनसे संपर्क रहा। हम ने बीच-बीच में उनसे संपर्क भी किया। उन्होंने गांधी जी को आदर्श माना था।

उन्होंने साफ कहा था कि हम गांधी जी के आदर्श को ले कर ही कामयाब हुए हैं, इसलिए हम हिन्दुस्तान में पहली बार आए हैं। जैसे वे जेल से छूटे तो सबसे पहले हिन्दुस्तान आए। ऐसी बहुत सारी बातें हैं। उस दिन सुबह 9 बजे से ले कर रात 8 बजे तक पूरे दिन हम साथ-साथ रहें। आज वे हमारे बीच नहीं हैं। लेकिन, हम जानते हैं कि उन्होंने गांधी जी को आदर्श माना। हम लोगों को भी मंडेला साहब के आदर्शों को जनता के बीच, नौजवानों के बीच और पूरे देश के अंदर फैलाना चाहिए। यही उनके लिए सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी। हम आज उनके निधन पर दुःख व्यक्त करते हैं।

श्री दारा सिंह चौहान (घोसी): धन्यवाद, अध्यक्ष महोदया, दुनिया की अज़ीम हस्ती, जिन्हें नेल्सन मंडेला के नाम से जाना जाता है, आज दुनिया में नहीं हैं। उन्होंने पूरी जवानी जेल में काटी। वे पूरी जिंदगी साउथ अफ्रीका में रंग-भेद के खिलाफ लड़ते रहे, इस दुनिया में मानवता का संदेश देने के लिए और गैर-बराबरी को खत्म करने के लिए लड़ते रहे, लेकिन वे आज हमारे बीच में नहीं हैं। नेल्सन मंडेला ने रंग-भेद के खिलाफ और गैर-बराबरी के खिलाफ संघर्ष किया। आज 6 दिसम्बर का दिन है। बाबा साहेब, डा. भीम राव अंबेडकर जिन्होंने देश को संविधान का दस्तावेज सौंपा, जो इस मुल्क में गैर-बराबरी को खत्म करने के लिए, इस देश की हजारों साल की जाति व्यवस्था को खत्म करने के लिए लड़ते रहे, संविधान ने हमें जो अधिकार दिए, आज उनका परिनिर्वाण दिवस है। हमारी नेता, बहन कुमारी मायावती जी, जो हमारी पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं, ने सुबह ही नेल्सन मंडेला को श्रद्धांजलि अर्पित की हैं। बाबा साहब अंबेडकर के परिनिर्वाण दिवस पर उन्होंने श्रद्धांजलि अर्पित की।

अध्यक्ष महोदया, आज हम और पूरी दुनिया के लोग जो इस गैर-बराबरी वाली व्यवस्था के खिलाफ लड़ते रहे, जिन्होंने पूरी जिंदगी इसमें लगाई है, आज वे सारे लोग नेल्सन मंडेला के न रहने पर दुःखी हैं। इनके बारे में हम लोग बचपन में पढ़ते थे। उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी साउथ अफ्रीका में रंग-भेद के खिलाफ लगायी। ऐसे अज़ीम हस्ती जिन्होंने बीमारी की हालत में भी अपना संघर्ष जारी रखा, दुनिया ने उन्हें सम्मानित किया। भारत सरकार ने जिन्हें भारत रत्न की उपाधि दी, बाबा साहब को भी यह उपाधि दी। आज मैं इस हाउस में अपनी पार्टी की तरफ से नेल्सन मंडेला के न रहने पर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री शरद यादव (मधेपुरा) : अध्यक्षा जी, आज दुनिया का एक बड़ा आदमी हमारे बीच से प्रस्थान कर गया। मैं यह मानता हूं कि इंसान इंसान में जो फर्क है, उसकी लड़ाई हिन्दुस्तान में भी बहुत हुई है। लेकिन डा. नेल्सन मंडेला के लिए ऐसी सफलता है कि वे दुनिया में एपारथीड यानी रंग के फर्क के लिए लड़ते रहे। मार्टिन लूथर किंग तो शहीद हो गए, अब्राहिम लिंकन भी शहीद हो गए। वहां इन्हीं बड़े लोगों द्वारा बराबरी

आई। मैं इस मौके पर सीमांत गांधी को स्मरण करना चाहूंगा। उनकी जिंदगी भी भारत की आजादी के लिए जेल में बीती। यदि देश के बंटवारे में किसी एक आदमी ने जिंदगीभर भुगतने का काम किया है तो उसका नाम सीमांत गांधी है। सीमांत गांधी और नेल्सन मंडेला की तुलना नहीं हो सकती, लेकिन दोनों की राह और रास्ता एक ही था। महात्मा जी का अन्याय के खिलाफ जो लेन-देन है, वहां से लड़ते हुए उन्होंने हिन्दुस्तान को आजाद करवाया। मंडेला साहब ने वही राह पकड़ी यानी बिना हथियार के अहिंसा के रास्ते से सिविल नाफरमानी करके अन्याय के खिलाफ लड़ाई लड़ी। इन तीन व्यक्तियों में से दो व्यक्ति सफल हुए।

मैं एक बात निवेदन करना चाहूंगा कि भारत में जितनी तरह के अन्याय, विषमताएं हैं, उनकी लड़ाई अधूरी है। जब नेल्सन मंडेला जी यहां आए थे, उस समय हमारी सरकार थी। उस समय परिस्थिति ऐसी थी कि सामाजिक विषमता का एक मुद्दा मंडल लगा हुआ था। मुझे अच्छी तरह याद है कि उनके स्वागत में भारत में पहले दिन तो बहुत उल्लास था, लेकिन जब उन्होंने मंडल कमीशन के हक में बोलने का काम किया, तो वे यहां मेहमान नहीं बोझ बन गए थे, ऐसा उस समय के सारे अखबारों और लोगों को देखकर लगता था। इस देश में रंग-भेद पहचान में आता है लेकिन जाति-भेद पहचान में नहीं आती। जब मैं यह बात बोल रहा हूं तो इस सदन में मानस के तौर पर बहुत लोगों की सहमति है लेकिन संस्कार के तौर पर नहीं है। मैंने यह सवाल उठाया है तो कुछ लोगों को अच्छा नहीं लग रहा होगा। शायद दुनिया में जाति, विषमता का इतना बड़ा अन्याय आज भी नहीं है। जाति, विषमता इस देश को लंगड़ा करती है, पंगु करती है, कमजोर करती है। लेकिन इस पर चर्चा करने के लिए भी कोई तैयार नहीं है। पहले बहस होती थी लेकिन आज बहस करने के लिए भी कोई तैयार नहीं है। हम नेल्सन मंडेला जी का नाम ले रहे हैं, लेकिन उनकी लड़ाई अन्याय के खिलाफ थी। इस देश में सदियों का अन्याय इतना वैज्ञानिक है कि आप उस पर तर्क और वितर्क नहीं कर सकते। यदि आप उसकी लड़ाई लडेंगे तो आगरा का टिकट कटवाएंगे, बरेली पहुंच जाएंगे, ऐसा गजब खेल है। जिस व्यक्ति ने जाति व्यवस्था का गठन किया होगा, हिन्दुस्तान में ही नहीं, दुनिया भर में उसके दिमाग का कोई सानी नहीं होगा। इस सदन में अलग-अलग जाति के सदस्य बैठे हुए हैं। कोई शादी-विवाह नहीं होता। इसलिए उनके निधन से एक ही बात निकलती है कि हिन्दुस्तान में जितने तरह के जुल्म हैं, जिनके खिलाफ लड़ाई चलती रही है, वह लड़ाई अब तेज होनी चाहिए, ताकत के साथ आगे बढ़नी चाहिए। हजारों वर्षों की आर्थिक विषमता और जाति व्यवस्था की विषमता को मिटाये बगैर दुनिया में न्याय नहीं आ सकता, यह मैं पक्का कहना चाहता हूं। ...(व्यवधान) हां, सामाजिक विषमता। कुंवर साहब, जाति विषमता और सामाजिक विषमता में कोई फर्क नहीं है।

अध्यक्ष महोदया, मैं उनको यही श्रद्धांजलि देता हूं कि उनसे प्रेरणा लेकर, जो परिवर्तन और अन्याय के खिलाफ लड़ने वाले लोग हैं, उनको संकल्प लेना चाहिए, क्योंकि आज का दिन मंडेला साहब का वही दिन है। मैं उनको अपनी और अपनी पार्टी की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। धन्यवाद।

PROF. SAUGATA ROY (DUM DUM): Madam, I rise to pay my tribute to one of the greatest men of modern times, Nelson Mandela. The world is definitely poorer today with his demise at the age of 95. Nelson Mandela led the struggle of the South African people against white racism and apartheid. For the struggle, he was incarcerated in a small cell in the prison at Robben Island for as long as 27 years, one of the longest prison terms served by anybody. When he came out, many thought that he would have rancor, but he had no rancor. As the President of the new South Africa, he led the fight for racial reconciliation. There were no racial riots after Nelson Mandela became the President. So, Madam, Nelson Mandela's death is as much a loss to South Africa as it is to India, as our Prime Minister has remarked this morning. It is because, he was a true Gandhian and he led the South African people on a non-violent path. While the world pays tribute and its respects to him today, I remember proudly that he came to our city, Kolkata. I remember his smiling face. He was dressed in a flowery silk shirt and he was waving at all those who were gathered to see him. The world will draw inspiration, all struggling people will draw inspiration from the life and teachings of Nelson Mandela. So the best way to pay respect to him would be in his own words. Mandela said:

> "There is no easy walk to freedom anywhere, and many of us will have to pass through the valley of the shadow of death again and again before we reach the mountaintop of our desires."

I again pay my homage to the great man.

SHRI T.K.S. ELANGOVAN (CHENNAI NORTH): Madam Speaker, on behalf of our leader Dr. Kalaignar M. Karunanidhi and the DMK Party, I join the other leaders in conveying our condolences to the family and the people of South Africa.

Nelson Mandela was a great leader. He had been a strong fighter against apartheid. There is a saying in Tamil; Saint Thiruvalluvar has said: "*pirapokkum ella uyirkum*" which means all men are born equal. That is the tenet of a civilized society for which Nelson Mandela had to fight and had to be in prison for about 27 years.

The real respect we pay to him is by continuing his mission of fighting against apartheid, fighting against denial of civil rights to society, ethnic society, religious society or linguistic society wherever they are denied of such rights conveyed to the majority in a civilized world.

Our great leader of the Dravidian movement Thanthai Periyar, E.V. Ramasamy also died at the age of 95. He was always fighting to ensure equality for depressed and oppressed in the Indian society.

Dr. Nelson Mandela had also breathed his last at the age of 95. Such stalwarts change the world. Such stalwarts give respect to humanity. Such leaders give respect to mankind. Such leaders ensure social justice in all respects, be it woman or man. So, it is our mission to see, to ensure that no society in this civilised world is deprived of its rights whether in India or in Sri Lanka or in other countries.

With these words, I, on behalf of the DMK Party, join the other leaders in conveying our condolences to the family of departed leader.

SHRI BASU DEB ACHARIA (BANKURA): Madam, I rise to convey, on behalf of my party, my condolences to the family of Dr. Nelson Mandela and to all the people of South Africa. Dr. Nelson Mandela fought throughout his life against the exploitation, injustice and apartheid policy which was being pursued by the colonists. He was in jail for 28 years.

Madam, I got the opportunity to visit that Robben Island. You can compare it with our Andaman Island. Our freedom fighters were sent to Andaman Island and torture was perpetrated against those freedom fighters. It is also known as Kalapani. In Robben Island I have seen this small cell and I was surprised as to how could such a great man stay within that small cell.

Madam, Nelson Mandela is not only the leader of South Africa but he is the leader of exploited mass of the entire world. He fought against the apartheid policy, exploitation and injustice. After his release and after that apartheid policy was defeated, he came to our country and to our city of Kolkata. Thousands of people gathered to receive such a great leader.

The death of Dr. Nelson Mandela is not only the loss to the people of South Africa but to the entire exploited people of the world. In our country inequality, discrimination and exploitation is continuing even after 66 years of Independence. Our greatest tribute would be to pledge today that we will follow the path, the struggle that was led by Dr. Nelson Mandela throughout his life. When the apartheid policy was defeated a democratic Government was set up. After the elections, the South African National Congress and the South African Communist party together have been running the Government. Since then, there is a coalition government and the problem of the people of South Africa is being solved.

Madam, Dr. Nelson Mandela was the greatest friend of our country. So, the death of Nelson Mandela is the greatest loss for the people of our country also.

Madam, on behalf of our Party, I pay tribute to Dr. Nelson Mandela.

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB (CUTTACK): Madam Speaker, I stand here today to express my heartfelt condolences. On behalf of my Party, Biju Janata Dal, I extend my condolences to the family of Dr. Nelson Mandela and also to the people of South Africa.

God has been kind to us that we have seen such stalwarts walking on this earth fighting non-violently to establish peace and to destroy the scourge of apartheid. Nelson Mandela's fight against racism, again apartheid will be a source of inspiration for human civilization.

At this moment, I recall the non-violent struggle of Lech Walesa of Poland who fought against a very oppressive government. We also remember the fight against an autocratic government of Philippines when democracy triumphed because of non-violent struggle.

India has all along stood with the people who have fought against apartheid, fought against racism and fought against discrimination. The struggle against oppression, against apartheid and against satanic forces was the call of our Father of the Nation, Mahatma Gandhi. He believed in non-violence not only in his speech but also in his action.

When Gandhiji was shot here in Delhi in 1948, many people paid condolences and homage to him. The best which I can remember today came from the great Scientist, Einstein. His words were: "People who will be in dismay may think that whether such a person had actually walked on this earth." The similar sentence can also be said today that in posterity, in future many people may wonder whether such a person like Dr. Nelson Mandela had actually walked on this earth.

With these words, I express my condolence.

श्री अनंत गंगाराम गीते (रायगढ़): अध्यक्ष जी, डा. नेल्सन मंडेला जीवनभर गुलामी और वर्णभेद के खिलाफ लड़ते रहे। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका को मानवता का जीवन तो दिलाया ही, उसके साथ-साथ पूरी दुनिया को भी मानवता का संदेश दिया। उनकी महानता को जानते हुए, सदन के नेता श्री सुशीलकुमार शिंदे जी ने कहा कि हम किसी विदेशी नागरिक को भारत रत्न नहीं दे सकते। इनकी बातों से प्रतीत होता है कि सारा

हिन्दुस्तान उनकी महानता को जानता है। इसलिए आज हम यहां पर उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।

मैं, अपनी पार्टी - शिवसेना की ओर से उनकी महानता को सलाम करते हुए, उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

SHRIMATI SONIA GANDHI (RAEBARELI): Madam Speaker, with the passing away of Dr. Nelson Mandela, the world is deprived of the luminous presence and a Radiant Spirit.

Through the long years of his struggle for South Africa's Freedom, freedom from oppression, racial prejudice, inequality and poverty, Nelson Mandela redefined the meaning of 'courage, sacrifice and forgiveness.'

Over the 10,000 days he spent in a brutal prison, sacrificing 27 years of his life for the freedom of his people, his courage never wavered nor did his conviction that his cause was just and true.

He emerged from his long incarceration with not a trace of bitterness or vengeance in his heart, only a renewed determination to erase the little legacy of apartheid, break down the barriers of hatred and distrust between Whites and Blacks and unite South Africa's people in a climate of reconciliation and harmony.

Nelson Mandela always led from the front but like a true leader, he had the gift of taking others along with him. His own courage was almost superhuman yet he had the gift of inspiring others to acts of extraordinary heroism as well.

Like a true democrat, he voluntarily renounced political power and office after serving for five years as President of South Africa even though his country pleaded with him to stay as President for life.

In his retirement from public life, 'Madiba' continued to be a figure of inspiration, support and hope for oppressed and marginalised people all over the world. His spirit remained indomitable and undimmed till the very end, so did his moral authority shining bright like a guiding star in a troubled world.

'Madiba' was a beloved figure in India. We felt deeply honoured that after his release from prison, India was one of the first countries he visited in 1990. He was awarded the *Bharat Ratna,* the highest honour that India can bestow because we loved him and revered him. Because like the Mahatma, who had inspired him, he was a leader who belonged to all humanity, a towering beacon for all who cherished freedom, democracy and social justice.

Today, I join millions of Indians in mourning his loss. We feel bereft as though we have lost a beloved father. We will be forever grateful that such a one, as he, walked this earth of ours.

On behalf of my party and on my own behalf, I express my deep felt condolences to Madiba's family and to the people of South Africa.

.

डॉ. संजीव गणेश नाईक (ठाणे): धन्यवाद अध्यक्ष महोदया जी। हम सभी ने डॉ. मंडेला जी के बारे में बहुत ही अच्छे शब्द कहे। मैं अपनी पार्टी एनसीपी की ओर से उन्हें आदरपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। हम सबको पता है कि वह महात्मा जी के विचारों से बहुत ही प्रभावित थे। उन्होंने इसी बात को कहा कि मुझे जो दुख और दर्द हो रहा है, मैं जो पीड़ा सहन कर रहा हूं, उसे मैं सुख में परिवर्तित करना चाहता हूं, और वह सुख है शांति का। मेरे देश को, विचारों से आज़ाद करना है, क्योंकि लड़ाई हरदम जो जीती जाती है, वह शस्त्रों और अस्त्रों से जीती जाती है, लेकिन वैचारिक लड़ाई विचारों से ही लड़ी जाती है और वही विचार उन्हें पूरे विश्व को बताए। मैं आदरपूर्वक उन्हें यहां श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

DR. M. THAMBIDURAI (KARUR): Madam Speaker, on behalf of my Party leader, hon. Chief Minister of Tamil Nadu, Dr. Amma, we also express our heartfelt condolence on the demise of a leader of international repute, Bharat Ratna Dr. Nelson Mandela.

He was engaged himself in resisting the apartheid policies of the Ruling National Party in South Africa. He was put behind the bars for nearly five years

during 1956-61. In June 1964, he was sentenced to life imprisonment along with seven members. Therefore, he nearly spent 27 years in the prison for the noble cause.

During his prison term, his reputation grew steadily. He was widely accepted as the most significant leader in South Africa and became a symbol of resistance as anti-apartheid movement gathered strength.

He was released in 1990. After his release, he wholeheartedly strove hard for attaining the goals that he stood for.

He is a tall leader. As our Father of the Nation Mahatma Gandhi, he also stood for 'non-violent' way of resolving conflicts and issues. He was also conferred with Nobel prize for his services.

On his demise, we join the rest of the world to express our condolences. May his soul rest in peace.

SHRI GURUDAS DASGUPTA (GHATAL): Madam, our tribute to him will be really not a ritual but real if we learn from his work, his sacrifice and the way in which he fought for the freedom of his nation.

The point is, he is one of the greatest of the great in the world. He is rarest of one of the rare of the world. He was the Mahatma Gandhi of South Africa. He was a militant fighter. I had also visited the place where he had to live for 27 years. He was a militant fighter never lost in despair. He fought for freedom. He fought for democracy. He fought against exploitation. He fought for human rights. He fought against social injustice and social discrimination. I do not believe that the world becomes poorer. I believe his Memorial we have seen remains as a source of constant inspiration to the millions of the world, who are still fighting for their right to life.

Madam, he is to be ranked with Mahatma Gandhi and with Abraham Lincoln and he will be remembered as an unflinching fighter who fought for the rights of the common people. When the rights of the common people are violated, it is Nelson Mandela who inspires us to fight. Therefore, India being so close to

South Africa, must take that lesson in the way Nelson Mandela led the Government and tried to empower the people who were marginalized and exploited.

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): अध्यक्ष महोदया, आपने और सदन के सभी सम्मानित नेताओं ने जो दुनिया के महान गांधीवादी नेल्सन मंडेला के निधन पर शोकोद्गार प्रकट किये हैं हम उनके साथ हैं। महोदया, दुनिया में सत्य-अहिंसा का महात्मा गांधी जी के गांधीवाद का प्रयोग मार्टिन लूथर किंग और नेल्सन मंडेला साहब ने किया। नेल्सन मंडेला साहब साउथ अफ्रीका में रंग-भेद नीति के खिलाफ जहां पर महात्मा गांधी जी मोहनदास करमचंद गांधी से महात्मा गांधी हुए। रंग-भेद के कारण फर्स्ट क्लास का टिकट रहते हुए धकियाकरके उन्हें प्लेटफार्म पर गिरा दिया गया था, वहीं से सत्याग्रह की शुरुआत हुई। उसी मुल्क में नेल्सन मंडेला साहब ने रंग-भेद के खिलाफ सफल गांधीवाद और सत्य-अहिंसा का प्रयोग किया।

महोदया, इसीलिए भारत और साउथ अफ्रीका का रिश्ता अपनापन और दुनिया में अजूबा है। नेल्सन मंडेला जी के निधन से दुनियाभर के महान गांधीवादी, जो सत्य और अहिंसा में विश्वास रखते हैं, स्वतंत्रता के पक्षधर हैं, मानवता के पुजारी हैं, वे सभी दुखी हुए हैं। सदन से जो भावना जाए, उसमें यह निहित हो कि हिंदुस्तान के लोग नेल्सन मंडेला जी के निधन से बहुत ज्यादा दुखी हैं, लेकिन वे अमर रहेंगे क्योंकि उन्होंने गैर बराबरी के खिलाफ, मानवता के लिए, नर-नारी समता के लिए, काले-गोरे में भेद खत्म करने के लिए लड़ाई लड़ी है। उन्होंने 34 वर्षों तक जेल यातना सही है। यह दुनिया के इतिहास में एक इतिहास है। जब तक सूरज-चांद रहेगा, नेल्सन मंडेला साहेब का नाम रहेगा और वे अमर रहेंगे।

इन्हीं भावनाओं के साथ मैं सभी नेताओं के शोक उदगार के साथ हूं।

MADAM SPEAKER: On a personal note, today I remember with a heavy heart my visit to South Africa seeing the tiny cell of Nelson Mandela for 27 years in Robben Island prison and finally meeting the legendary hero himself. For me that visit was like a pilgrimage from which I draw strength till today. It was the most inspiring journey of my life. Physically he is no more with us, but his ideals of human rights and equality live on as our guiding light.

The House wishes to convey its heartfelt condolences to the family of Dr. Mandela, the Parliament, the Government and the people of the Republic of South Africa.

The House may now stand in silence for a short while as a mark of respect to the memory of the departed.

11.47 hrs

The Members then stood in silence for a short while.

MADAM SPEAKER: The House stands adjourned to meet on Monday, the 9th December 2013 at 11 a.m.

11.48 hrs

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Monday, December 9, 2013 / Agrahayana 18, 1935 (Saka)